ओ३म्

गायत्री अमृत वाणी

ले० - डॉ० योगेन्द्र कुमार

एम. ए. पी. एच डी.



- प्रकाशक -

सत्यं शिवम् सुन्दरम्

वेद गायत्री परिवार

78 प्रतापगढ़ जम्मू

संस्करण

सं. 2053

क्यों ?

यह अमृत वाणी क्यों लिखी गई है ? यह इस लिये लिखी गई है कि गायत्री माता के भक्तगण इसे मिलकर या अकेले में सरलता से गा सकें। जो गायत्री को गाता है उसकी यह रक्षा करती है। तथा मनोकामनाएं पूर्ण करती है। श्रद्धा से गाओ। इसके आनन्द में गोते लगाओ। तथा अलौकिक गुरू के आशीर्वाद को प्राप्त करो। गायत्री मन्त्र को प्रति दिन जपो।

डा० योगेन्द्र कुमार

गायत्री अमृत वाणी

ओ३म् भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भार्गो देवस्य
धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

प्रभु प्यारे के नाम को ओं निरंजन जान ,
वही विधाता आप है सृष्टि रचना काम ।

गायत्री के जाप से मिले उसी का धाम ,
प्रति दिन प्रातः काल जो भक्ति करे निष्काम ।

गायत्री गाता रहे ध्यान उसी के पास ,
माता सब पूरी करे सारी उसकी आस ।

दिल से उसको ध्याईये मन में ज्योति जलाय ,
आनन्द की सीमा नहीं तुरत उसे पाजाय ।

वह तो सदा दयाल है देता सब कुछ आप ,
भक्त भरोसे से करे सदा उसी का जाप ।

गायत्री का ध्यान जो करे सुबह और साम ,
प्रतिदिन के अभ्यास से मिले उसी का धाम ।
सतचित आनन्द है वही वही गुणों की खान ,
कल्याण करे सबका वही करता पूरे काम ।
अजर अमर गुण धाम है सभी जगह भरपूर .
ज्ञानी जाने पास ही मूरख जाने दूर ।
चरणों में तेरे पड़ा दो आषिश का हाथ ,
चिन्तन में रहते सदा तुम्हीं हमारे साथ ।
कैसे मैं वर्णन करूं महिमा अपरम्पार ,
जीवन में पालूं तुझे तू जीवन का सार ।
तू प्राणों का है प्राणी सिरजन हार ,
प्राणों से प्यारा तू ही करूं तुझी से प्यार ।
सुख देता है सदा तू ही सुख का सार .
करता सब को है वही दुःख सागर से पार ।

वही हमारा पूज्य है वही जगत का सार,
तत् तेरा ही नाम है तूही तत् का सार।
विपदा में भी डटा रहे भक्त न माने हार;
वही सदा उसको करे भव सागर से पार।
उत्पादन सबका करे सबको जनम दिलाय,
दया करी सबके लिये दीनी देह बनाय।
तुझ ही को वरलें सभी दिल में लेंहि बिठाय,
तुम ही वरने योग्य हो मिलो हमें तुम आय।
वह ही तेज स्वरूप है सभी गुणों की खान,
उसके दिव्य स्वरूप का करें हृदय में ध्यान।
उसी एक प्रभु का सदा ध्यान धरें मन लाय,
भाव उसी के शुद्ध हों जो जन उसको गाय।
वरदा माता है वही तेरा वरजो पाय;
असमय में मरता नहीं लम्बी आयु पाय।

प्राणों को शक्ति मिले शक्तिमान बन जाय,
संतति सुख पावे सदा शुभ गायत्री गाय।
पशु धन की सीमा नहीं दूध मिले भरपूर,
धन से घर भरता रहे तन कष्टों से दूर।
सभी जने अच्छा कहें अपयश भागे दूर,
गायत्री का भक्त ही यश पावे भरपूर।
माता प्रेरक है वही वही सुखों की खान,
अपने वचनों से करे सदा उसी का गान।
बुद्धि में धारण करो करो उसी का ध्यान,
तेरा सब कुछ है वही जीवन उसको मान।
सतपथ पर चलते रहो वही चलावन हार,
भव सागर की नाव है पार लगावन हार।
बुद्धि की वृद्धि करो शक्ति तुम्हारे पास,
माता दो शक्ति हमें बनें तुम्हारे दास।

चार वेद के सार को ब्रह्म ऋषिने पाय,
चिन्तन इसका ही किया अर्थ सहित समझाय।
इसी लिये ब्रह्मा जुड़े गायत्री के साथ,
हम सब भी इसको जपें माला लेकर हाथ।
ऋषि वसिष्ठ ने भी जपा सिद्धि पाई आप,
बन्धन सारे कट गये दूर हुआ अभिशाप।
अर्थ सहित श्रीराम ने प्रतिदिन कीना जाप,
जो प्रतिदिन जपता इसे मिटते तीनों ताप।
श्रीकृष्ण ने भी किया इसी मन्त्र का जाप,
इसके जपने से मिटें जीवन के सब पाप।
गुरु कृपा से पाईये गायत्री का ज्ञान,
गुरु जनों का कीजिये सदा हृदय से मान।
सुखी रहो सुख दीजिये यही तुम्हारा काम,
ईश्वर से मिलते रहो कभी न छोड़ों नाम।

उसकी कृपा के बिना जीवन है बेकाम,
सभी पदारथ देत हैं ना लेता बदले दाम।
विष्णु उसका नाम है व्यापक है सब थान,
ब्रह्मा उसका नाम है सब से वही महान्।
शिव उसका ही नाम है करे सदा कल्याण;
पालक तेरा है वही पिता उसी को जान।
वह अविनाशी ओम् है रक्षक सब का मान।
वेद उसी के श्वास हैं ज्ञान उसी का जान।
वेद अनादि ज्ञान है ज्ञान भरा अनमोल,
गोते इसमें मारकर पावे रतन अमोल।
यजुर्वेद में भी कही महिमा वारं वार,
गायत्री गायन करो सामवेद का सार।
ऋग्वेद बतला रहा महिमा अपरं पार,
अथर्व वेद में भी कहा इसी मन्त्र का सार।

पावे प्राण प्रजा पशु और प्रेरणा प्यार,
गायत्री का भक्त ही पावे अन्न अपार।
गायत्री के छन्द में मन्त्र बनाया ईश;
मनन करे जो ध्यान से पावे वह जगदीश।
अक्षर हैं चौबीस ये वाक्य बने पांच,
जो जपता है ध्यान से कभी न आवे आंच।
गायत्री से लाभ हैं कभी न होवे हान;
नर नारी करते सदा इसी इसी मन्त्र का ध्यान।
महामन्त्र के जाप से घर होवे खुशहाल,
झोली सब की यह भरे है अनोखा लाल।
जीवन में शक्ति मिले खुले स्वर्ग का द्वार,
गायत्री के जाप से मिले प्रभू का प्यार।
गायत्री के भक्त में दया प्रेम का वास;
आगे ही बढ़ता रहे होवे नही निराश।

कथनी करनी एक हो ना आवे अभिमान,
गायत्री का भक्त ही पावे सब सनमान।
निष्ठा से इसको जपो ध्यान लीन मन होय,
मनन करो इस मन्त्र का अनिष्ट कभी ना होय।
गायत्री माता तुझे सिमरों बारंबार
अपना भक्त बनाय कर नाव उतारो पार।
नाव पड़ी मझधार में चप्पू ले लो हाथ,
ना तुम छोड़ो भक्त को भक्त न छोड़े साथ।
जो ध्यावे माता तुझे ब्रह्म रन्ध्र में जाय,
चार पदारथ पाईये मुक्ति सुलभ हो जाय।
सिद्धासन पर बैठकर योग समाधि लाय,
आनन्द का अनुभव करे ध्यान मगन हो जाय।
ज्ञान नेत्र खुलते तभी हृदय कमल खिल जाय,
विश्व बने परिवार तब मैं मेरी मिट जाय।

अन्धकार जब दूर हो ज्ञान नेत्र खुल जाय,
आनन्द की सीमा नही परमेश्वर मिल जाय।

जह जीवन अनमोल है बोल उसी के बोल,
गायत्री देगी सदा सारे बन्धन खोल।

रागद्वेष में क्यों पड़ा मन को बना बिशाल।
चित से चौरी नाकरो देख पराया माल।

गायत्री का भक्त बन बना सभी को मीत,
मधुर सभी को ही लगें गा ऐसे तू गीत।

धीरज को खोवें नहीं दुर्गम पथ को पाय,
जीवन में ऊंचा चढ़ें माता बने सहाय।

गायत्री की गोद में माँ जैसा है प्यार,
प्रात: सायं बैठिये महा मोह को मार।

सत्य सदा बोलें सभी मीठे बोलें बोल,
सभी सुकर्मों को करें धरम तराजू तोल।

दु:खियों की सेवा करुं अधिक बनाऊं मीत,
जीवन मेरा कीमती व्यर्थ न जावे बीत।
सन्त समागम देख कर हृदय कमल खिल जाय,
मत बाहर ढूड़ो प्रभू घर बैठे मिल जाय।
गायत्री महिमा कही सुनो सदा मन लाय.
जीवन को सफली करो वर माता का पाय।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो
देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

ओ३म् स्तुता मया वरदा वेंद माता प्रचोदयन्ताम् पाव मानी द्विजानाम् आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्म वर्चसं मह्यं दत्वा ब्रजत ब्रह्म लोकम्।
स्तुति की वरदा माता की, कष्टों से दु:ख से त्राता की आयु प्राण प्रजा को देदो, यश वर्चस और धन को देदो।

ओं शान्ति : शान्ति : शान्ति :

गायत्री गुणगान

जय गायत्री माता जय गायत्री माता
हम तेरा गान करें हम तेरा ध्यान धरें।

तू सुख दायिनी कष्ट निवारिणी,
वरदा माता हम तेरा गान करें।

तू ही ज्ञान प्रकाशिनी बहु धन दायिनी,
प्रेरक माता हम तेरा ज्ञान करें।

वेदों का तुम सार रूप हो भक्त तुम्हें गावें,
तेरी छाया बैठ सभी जन सुख शान्ति पावें।

तुम ही वरने योग्य शक्ति हो तेरा वरण करें.
भक्ति भाव से मिलकर हम सब शत शत नमन करें।

हे सविता माता जय गायत्री माता,
हम अज्ञानी तू है ज्ञानी जीवन निर्माता।

हम अमृत पान करें हम तेरा ध्यान धरें
शरण तेरी जो आवे भव सागर तर जावे
नर मुक्ति को पाता जय गायत्री माता

सत्यं शिवम् सुन्दरम्
वेद गायत्री परिवार
के सदस्य बनिये तथा
गायत्री की दीक्षा लीजिये